और अज्ञेय से सर्वथा भिन्न समाज की निर्मम आलोचना करने वाले प्रगतिशील कहानीकार हैं। शहरी मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग के जीवन का शायद ही कोई पहलू हो जहाँ तक यशपाल की कलम न पहुँची हो। सामाजिक न्याय यशपाल की कहानियों का मुख्य स्वर है। **'परदा'** यशपाल की चर्चित कहानी है। चन्द्रकिरन सौनरिक्सा की व्यंग्य बुझी चोट से युक्त कहानियाँ अपना अलग स्थान रखती हैं। इसी प्रकार भाव प्रवण कहानियों के लेखक निर्गुण की कहानियों का अपना विशिष्ट स्थान है। विकास काल में समाज राजनीति इतिहास आदि से सम्बद्ध विविध प्रकार की कहानियाँ लिखी गईं। इनमें या तो आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रमुख हैं अथवा यथार्थ का आदर्शोन्मुख चित्रण किया गया है।

(3) उत्कर्ष काल (1947 से अब तक):- स्वाधीनता के पश्चात् 'कहानी' और 'नई कहानियाँ' आदि से सम्बद्ध अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। आंचलिक कहानियाँ एवं नई कहानी का उदय भी इसी काल में हुआ। आंचलिक कहानियों में प्रदेश विशेष के जन-जीवन, रीति-नीति, वेश-भूषा-आचरण, मानवीय सम्बन्ध आदि के चित्रण पर बल दिया गया। इन्हें एक प्रकार से प्रेमचंद की ग्राम जीवन सम्बन्धी कहानियों का पुनरुत्थान माना जा सकता है। इस शैली के कहानीकारों में फणीश्वरनाथ 'रेणु' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। **'ठुमरी'** उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है, **पंचलाइट, लालपान की बेगम, रसप्रिया** एवं **ठेस** उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। रेणु के अतिरिक्त मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह, शेखर जोशी, शैलेश मटियानी, प्रभाकर द्विवेदी, राजेन्द्र अवस्थी, रामदरश मिश्र, विवेकी राय इस प्रवृत्ति के सफल कहानीकार हैं। इन कहानीकारों ने निश्चय ही हिन्दी कहानी को वस्तु, शिल्प, और भाषा सभी दृष्टियों से समृद्ध किया है।

'नई कहानी' की प्रवृत्ति का परिचय इस समय प्रकाशित होने वाली पत्रिका, सारिका, कल्पना, कहानी, प्रतीक आदि के माध्यम से मिल जाता है। इस माध्यम से कहानीकारों की एक नई पीढ़ी उभरी, जिसमें भीष्म साहनी, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, कृष्ण बलदेव वैद, कृष्णा सोवती, हरिशंकर परसाई, अमरकांत, उषा प्रियम्वदा, हृदयेश ,धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, शानी, योगेश गुप्ता एवं कमल जोशी के नाम उल्लेखनीय हैं।

भीष्म साहनी की **'चीफ की दावत'**, मोहन राकेश की **'मलबे का मालिक'**, राजेन्द्र यादव की- **जहाँ लक्ष्मी कैद है,** कमलेश्वर की **'राजा निरबसिया'**, मन्नू भंडारी की **'एक प्लेट सैलाब'**, कृष्ण बलदेव बैद की **'उड़ान'**, कृष्णा सोवती की **'सिक्का बदल गया'**, अमरकांत की **'दोपहर का भोजन'**, उषा प्रियम्वदा की **'वापसी'**, हृदयेश की **'अंधेरी गली का रास्ता'**, धर्मवीर भारती की **'बंद गली का आखिरी मकान'**, निर्मल वर्मा का **'परिन्दे'**, शानी की **'बबूल की छाँव'** मिथिलेश्वर की **'बंद रास्तों के बीच'**, महीप सिंह की **'उजाले के उल्लू'**, गोविंद मिश्र की **'खाक इतिहास'**, ज्ञान रंजन की **'फेंस के इधर उधर'**, काशीनाथ सिंह की **'आदमीनामा'**, दूधनाथ सिंह की **'विजेता'**, हिमांशु जोशी की **'रथचक्र'** रमेश बक्षी का **'तलघर'** एवं रवीन्द्र कालिया का **'नौ साल की छोटी पत्नी'**, उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। भीष्म साहनी, अमरकांत एवं हरिशंकर परसाई की व्यंग्य प्रधान कहानियों में जीवन की विसंगतियाँ और विडम्बनाओं पर प्रहार किया गया है।

स्वतन्त्रता के पूर्व से ही अनेक महिला लेखिकाएँ कहानियाँ लिख रही हैं, जिनमें प्रमुख हैं उषादेवी मित्रा, होमवती देवी, तारादेवी और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा। स्वतन्त्रता के बाद भी अनेक महिला लेखिकायें इस क्षेत्र में अग्रसर हुईं जिनमें मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी एवं सातवें दशक में मृणाल पाण्डेय, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, दीप्ति खंडेलवाल, मेहरुन्निसा परवेज, निरुपमा सेवती, मणिका मोहिनी, मालती जोशी, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ आदि नाम उल्लेखनीय हैं। नवें दशक की महिला कहानीकारों में मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, नंदिता शुक्ल, ज्योत्स्ना मिलन, अचला नागर, कृष्णा अग्निहोत्री, के नाम उल्लेखनीय हैं। नई कहानियों में जीवन मूल्य और आदर्श निरर्थक से लगने लगे। इन खण्डित मूल्यों और टूटते हुए मानवीय सम्बन्धों का चित्रण इस दशक की कहानियों में विशेष रूप से हुआ है। भाषा की दृष्टि से भी कहानी में लाघव और व्यंजकता आई; और जन जीवन के निकट होकर अधिक शक्तिसम्पन्न हुई।

आज का कहानीकार जानता है कि औद्योगिक सभ्यता, पूँजीवादी संस्कृति और यंत्रीकरण के बढ़ते प्रभाव और दबाव के बीच मानवीय संवेदना और मूल्यों की रक्षा करने का उसका दायित्व आसान नहीं रह गया है। फिर भी कहानियाँ समस्त चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने में सक्षम हैं।

त्र कक्षा 11वीं 12वीं
विषय हिंदी व्याकरण
अध्याय 1 कहानी का उद्भव एवं विकास
प्रश्न 1हिंदी कहानी को कितने भागों में विभक्त किया गया?
प्रश्न2 कहानी के कितने भेद होते हैं?
प्रश्न3 कहानी के आरंभ काल एवं विकास काल में क्या अंतर है?
प्रश्न 4उत्कर्ष काल की विशेषताएं बताइए?

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, जयशंकर प्रसाद, चंडीप्रसाद हृदयेश, ज्वाला दत्त शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, विनोदशंकर व्यास, राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, निराला, सियारामशरण गुप्त, वृंदावनलाल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, यशपाल, पहाड़ी, विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द जोशी, अज्ञेय आदि उल्लेखनीय हैं। इस युग की पत्रिकाओं में इन्दु, सरस्वती, सुधा, माधुरी, वीणा, चाँद, अभ्युदय आदि में भी कहानियों को उपयुक्त स्थान प्राप्त हुआ है।

इस युग की कहानियों में स्पष्ट: तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती हैं - पहली भाव प्रधान आदर्शवादी कहानियाँ। जयशंकर प्रसाद, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द जोशी एवं अज्ञेय इस प्रवृत्ति के प्रमुख कहानीकार हैं। दूसरी प्रवृत्ति रोजमर्रा के यथार्थ जीवन को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियाँ, जिसमें गुलेरी जी, प्रेमचन्द, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, और विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के नाम उल्लेखनीय हैं। तीसरी प्रवृत्ति मनो विनोद प्रधान एवं परिहासमूलक कहानियों की है, जिसमें जी.पी. श्रीवास्तव और विश्वम्भरनाथ जिज्जा का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है।

प्रेमचंद ने आम आदमी की चारित्रिक विशेषताओं के साथ उसके भावात्मक और वैचारिक द्वन्द्वों को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया तथा आदर्श से यथार्थ, नग्न यथार्थ तक का चित्रण किया तो गुलेरी जी ने त्याग, बलिदान और प्रेम की उदात्त भावना को महत्व दिया। इस युग की मुख्य दो धाराओं के दो केन्द्रीय पुरुष हैं- प्रेमचंद और प्रसाद।

प्रेमचंद से हिन्दी कहानी की जातीय यथार्थवादी परम्परा शुरू होती है तो दूसरी ओर प्रसाद जी की आदर्श प्रधान, भाववादी और काव्य प्रधान कहानियों की परम्परा आरम्भ होती है। प्रसाद की कथा धारा रोमांटिक और मधुचर्यापूर्ण है, उसमें भावुकता के साथ-साथ दार्शनिकता और काव्यात्मकता का पुट है। प्रेमचंद की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों तथा 'गुप्त धन' के दो भागों में संग्रहीत हैं। **मंत्र, ईदगाह, नमक का दरोगा, बड़े घर की बेटी, सद्गति, पूस की रात** एवं **कफन** इनकी अत्यन्त चर्चित कहानियाँ हैं। प्रसाद जी के कुल 5 कहानी संग्रह हैं छाया, आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल और आकाशद्वीप जिसमें **पुरस्कार, आकाशद्वीप, गुण्डा, छोटा जादूगर** उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इसी समय सुदर्शन ने प्रेमचंद और कौशिक की भाँति सामाजिक तथा पारिवारिक कहानियों की रचना की, जिसमें आदर्शवादी मनोवृत्ति पर अधिक बल दिया गया। चतुरसेन शास्त्री ने सामाजिक कहानियों के अतिरिक्त ऐतिहासिक कहानियों की भी रचना की। '**भिक्षुराज**' तथा '**दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी**' विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। निराला ने अत्यंत अल्प कहानियाँ लिखते हुए भी हिन्दी कहानी में अपने निरालेपन से छाप छोड़ी है। क्रान्तिकारी निराला ने कहानी में यथार्थवाद को नया रूप दिया, जिसमें व्यंग्य की प्रमुखता है। **सुकुल की बीबी, सखी, लिली** आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। विकास काल के अधिकांश कहानीकार प्रेमचंद की शैली से प्रभावित रहे हैं। सियारामशरण गुप्त और वृंदावनलाल वर्मा की कहानियों में इस प्रभाव को प्राय: लक्षित किया जा सकता है। सियारामशरण गुप्त की कहानियों में मनोवैज्ञानिक, यथार्थ की पृष्ठभूमि में आदर्शवादी जीवन दृष्टि पर अधिक बल दिया गया है। वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक, सामाजिक और शिकार सम्बन्धी कहानयों की रचना की है, जिनमें आदर्शोन्मुख यथार्थ की प्रवृत्ति अधिक है। इनकी कहानियाँ '**कलाकार का दण्ड**' '**हर सिंगार**' '**दबे पाँव**' आदि में संकलित हैं।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ भी प्रेमचंद की प्रभाव परम्परा में जाती हैं। भगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ भी कुछ इसी शैली की हैं, '**दो बाँके**' '**मोर्चाबंदी**' और '**इंस्टालमेंट**' इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है, जिनमें सामाजिक रूढ़ियों और विषमताओं के प्रति सजीव व्यंग्य मिलता है।

प्रेमचंद के पश्चात जैनेन्द्र के आगमन से हिन्दी कहानी की दिशा बदली। इनकी कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' शीर्षक से नौ भागों में प्रकाशित हुई। '**पत्नी जाह्नवी**' और '**अपना-अपना भाग्य**' इनकी अत्यन्त चर्चित कहानियाँ हैं जिसमें मन की उलझनों, गुत्थियों और समस्याओं के मनोवैज्ञानिक चित्रण पर अधिक बल दिया गया है। इलाचन्द्र जोशी ने भी जैनेन्द्र की भाँति मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखी हैं। द्विजेन्द्र नाथ मिश्र 'निर्गुण' भाषा की दृष्टि से प्रेमचंद के निकट होते हुए भी शरतचन्द्र से प्रभावित हैं।

मनोवैज्ञानिक कहानियों की भाँति प्रगतिवादी कहानियों की रचना भी विकास काल में ही आरम्भ हो गई थी। इस क्षेत्र में यशपाल, चन्द्रकिरन सौनरेक्सा, रांगेय राघव, पहाड़ी आदि की कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। यशपाल, जैनेन्द्र

2019-20

...एवं भाव प्रधान कहानी। ...प्रमुख भेद हैं - । घटना प्रधान कहानी, । चरित्र प्रधान कहानी, ।

हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास:-

हिन्दी कहानी का विकास भारतेन्दु युग से होता है किन्तु इस काल में निबंधात्मक कहानी, या कथात्मक निबंधों की रचना हुई। भारतेन्दु का 'अद्भुत अपूर्व स्वप्न' इसी प्रकार की रचना है। सुविधा के लिए हिन्दी कहानी के विकास को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) आरम्भकाल (1900-1910) (2).विकासकाल (1911-1946) (3).उत्कर्षकाल (1947 से आज तक)।

(1) आरम्भकाल (1900-1910):-

द्विवेदी युग में हिन्दी की मौलिक कहानियों का विकास हुआ पर हिन्दी की पहली मौलिक कहानी पर विवाद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सरस्वती' में प्रकाशित कुछ मौलिक कहानियों का उल्लेख किया है जिसमें किशोरीलाल गोस्वामी की '**इन्दुमति**' (1900) और '**गुलबहार**' (1902), मास्टर भगवानदास की '**प्लेग की चुड़ैल**' (1902), रामचन्द्र शुक्ल की '**ग्यारह वर्ष का समय**' (1903), गिरिजादत्त वाजपेयी की '**पण्डित और पण्डितानी**' (1903), बंगमहिला की '**दुलाईवाली**' (1907) में प्रकाशित कहानियाँ हैं।

उपर्युक्त कहानियों में मौलिकता, मार्मिकता, प्रवाह, गतिशीलता और भाव प्रधानता की दृष्टि से क्रमशः 'इन्दुमति', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाईवाली' को प्रथम मौलिक कहानी माना जा सकता है। इन कहानियों से हिन्दी कहानी में शिल्प-विधान के प्रति जागरूकता के लक्षण दिखाई देने लगे क्योंकि इनमें कथावस्तु, चरित्र चित्रण, वातावरण आदि, कहानी के सभी तत्वों के समावेश की ओर ध्यान दिया गया। इस आरम्भिक काल में मौलिक कहानियों की अपेक्षा अनुवादों की ओर अधिक ध्यान दिया गया। बंगमहिला और पार्वतीनंदन ने बंगला से, रामकृष्णदास और सूर्यनारायण दीक्षित ने अंग्रेजी से अ... गदाधर सिंह तथा जगन्नाथप्रसाद त्रिपाठी ने संस्कृत से अनेक कहानियों को हिन्दी में अनूदित किया।

(2) विकासकाल (1911-1946):-

1900 ई तक हिन्दी कहानी अपने आधुनिक रूप में विकसित हो चुकी थी। **सरस्वती, गृहलक्ष्मी** और सु... आदि विभिन्न पत्रिकाओं में अनूदित कहानियों के साथ मौलिक कहानियाँ भी प्रकाशित होने लगी थी। 1911 में प्रस... की पत्रिका इन्दु में उनकी पहली कहानी '**ग्राम**', '**भारत जीवन**' में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की '**सुखमय जीवन**' तथा श्रीवास्तव की '**पिकनिक**', 1913 में विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की '**रक्षाबंधन**' और 1915 में गुलेरीजी की कालजयी कहानी '**उसने कहा था**' लिखी गई। इस युग के कहानीकारों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी,

2019-20